उच्चतर माध्यमिक

समाजशास्त्र

माध्यमिक स्तर तक पढ़ने के बाद विद्यार्थी में प्रकृति एवं जिस समाज में वह रहता है, उसकी विशेषताओं की समझ आने लगती है। समाजशास्त्र सामाजिक संबंधों के सभी पहलुओं की अन्वेषणा करता है तथा यह समझने में सहायता करता है कि मनुष्य ने उस समाज जिसमें वे रहते हैं, की रचना क्यों की एवं यह भी कि किसी अन्य व्यक्ति एवं समूह से वे कैसा व्यवहार करते हैं। समाजशास्त्र को सभी सामाजिक विज्ञान के विषयों का एक दूसरा सम्मिलित विषय समझा जाता है क्योंकि यह समाज के आर्थिक, राजनीतिक, मानवशास्त्रीय, ऐतिहासिक, भौगोलिक तथा मनोवैज्ञानिक आयामों का अध्ययन करता है। समाजशास्त्र, यद्यपि, मुख्य रूप से मानव संबंधों की विविधता का अध्ययन करता है, विशेष रूप से सामाजिक वर्ग, प्रजाति, मानव जाति, लिंग तथा उम्र आदि के कार्य क्षेत्र में।

समाज के संबंधों की अज्ञानता ही सभी सामाजिक दुर्गुणों की जड़ नहीं है। वैज्ञानिक पद्धति से समाज के संबंध में जानकारी प्राप्त कर समाज के विकास में योगदान दिया जा सकता है। समाजशास्त्र के जनक ऑगस्ट कॉम्टे ने कहा था–'जिस प्रकार मानव समाज के विज्ञान का विकास करेगा मानव अपनी समाजिक नियति का अधिपति हो जाएगा।'

परिवर्तन सतत् एवं स्थायी है। विश्व में नित हो रहे परिवर्तन ने समाजशास्त्र को अध्ययन का एक महत्वपूर्ण विषय बना दिया है। समाजशास्त्र का यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को विशेष कर भारतीय सामाज के संदर्भ में सामान्य रूप से परिवर्तन एवं विकास की प्रक्रिया से परिचित कराएगा। शिक्षार्थी को, एक विद्यार्थी एवं एक नागरिक होने के नाते, सत्यता के बोध एवं वास्तविक स्थिति के स्पष्ट अनुभव से परिचित कराने की आवश्यकता है।

उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

- समाजशास्त्र की मूलभूत अवधारणा से शिक्षार्थियों को परिचित कराना।
- सामान्य रूप से समाज में परिवर्तन एवं विकास की प्रक्रिया से भारतीय समाज के संदर्भ में, परिचित कराना विशेषकर शिक्षार्थियों को परिचित कराना।
- भारतीय समाज के विभिन्न आयामों से परिचित कराना।
- शिक्षार्थियों को निष्पक्ष रूप से समाज की वास्तविकताओं का अवलोकन करने के लिए सक्षम बनाना।
- और अन्ततः शिक्षार्थियों को सामाजिक तथ्यों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने के योग्य बनाना।

अंक तथा समय का विभाजन

मॉड्यूल	अंक	अध्ययन अवधि (घंटा)
1. समाजशास्त्र: मूलभूत अवधारणा	30	70
2. समाजिक संस्था तथा सामाजिक स्तरीकरण	12	35
3. सामाजिक परिवर्तन, समाजीकरण तथा सामाजिक नियंत्रण	13	35

4. भारतीय समाज	30	60
5. ऐच्छिक (कोई एक महिलाओं की स्थिति		
या संस्कृति	15	40
कुल	100	100

माडयूल I

शीर्षक : समाजशास्त्र : मूलभूत अवधारणा

समय: 70 घंटा अंक : 30

प्रस्तावना : यह माड्यूल शिक्षार्थियों को समाजशास्त्र से परिचित कराता है। यह शिक्षार्थियों को समाजशास्त्र की परिभाषा, इसके विकास तथा वृद्धि तथा अन्य सामाजिक विज्ञान के विषयों से अवगत कराता है।

यह माड्यूल प्रमुख सामाजिक अवधारणाओं की भी व्याख्या करता है।

1.1 समाजशास्त्र का परिचय।

1.2 समाजशास्त्र का प्रादुर्भाव एवं विकास।

1.3 समाजशास्त्र: इसका अन्य सामाजिक विज्ञान विषयों से संबंध।

1.4 समाजशास्त्र में शोध की पद्धति एवं तकनीक।

1.5 समाज, समुदाय, समिति तथा संस्था।

1.6 सामाजिक समूह।

1.7 सामाजिक संरचना एवं सामाजिक व्यवस्था।

1.8 प्रतिमान एवं मूल्य।

1.9 प्रस्थिति एवं भूमिका।

1.10 सहयोग, प्रतियोगिता तथा संघर्ष।

1.11 पर-संस्कृतिकरण, सात्मीकरण, तथा एकीकरण।

माड्यूल II

शीर्षक: सामाजिक संस्था एवं सामाजिक स्तरीकरण

समय: 35 घंटा अंक: 12

प्रस्तावना : शिक्षार्थियों को समाज में विद्यमान प्रमुख सामाजिक संस्थाओं से परिचित कराने के उद्देश्य से इस माड्यूल की अभिकल्पना की गई है। साथ ही उनको क्रम परंपरा, विभेदीकरण तथा असमानता पर आधारित सामाजिक विभेद से अवगत कराना।

2.1 विवाह।

2.2 परिवार।

2.3 नातेदारी।

2.4 आर्थिक, राजनीतिक, तथा धार्मिक।

2.5 समाजिक स्तरीकरण; क्रम-परंपरा, विभेदीकरण एवं असमानता।

माड्यूल III

शीर्षक : सामाजिक परिवर्तन, समाजीकरण एवं सामाजिक नियंत्रण।

समय: 35 घंटा अंक : 13

प्रस्तावना: यह माड्यूल शिक्षार्थियों को समाज की परिवर्तन की प्रक्रिया से परिचित कराता है तथा समाजीकरण के द्वारा कोई व्यक्ति कैसे समाज का सदस्य बनता है, से अवगत कराता है। समाज में सामाजिक नियंत्रण कैसे स्थापित किया जाता है। साथ ही यह माड्यूल समाज एवं पर्यावरण, के संबंध, की व्याख्या करता है।

3.1 समाजिक परिवर्तन के कारक।

3.2 सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाएँ।

3.4 समाजीकरण।

3.5 सामाजिक नियंत्रण।

3.6 सामाजिक विचलन।

3.7 समाज एवं पर्यावरण।

माड्यूल IV

शीर्षक : भारतीय समाज

समय : 60 घंटा अंक : 30

प्रस्तावना : यह माड्यूल शिक्षार्थियों को कतिपय भारतीय सामाजिक विचारकों तथा भारतीय समाज के विविध आयामों से अवगत कराता है। यह भारत की मुख्य सामाजिक समस्याओं, विशेषकर कुछ कमजोर वर्गो की समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाता है।

4.1 भारतीय सामाजिक विचारक।

4.2 एकता एवं विभिन्नता।

4.3 राष्ट्रीय एकता: अवधारणा एवं चुनौतियाँ।

4.4 भारतीय समाज : जनजाति, ग्रामीण, शहरी।

4.5 भारत में जाति व्यवस्था।

4.6 भारत में प्रमुख धार्मिक समुदाय।

4.7 भारत की प्रमुख सामाजिक समस्याएँ।

4.8 अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जन जाति की समस्याएँ।

4.9 अन्य वंचित वर्गो की समस्याएँ।

माडयूल V

ऐच्छिक माडयूल

समय : 40 घंटा अंक : 15

प्रस्तावना : इस माडयूल का उद्देश्य शिक्षार्थियों को उनकी रुचि के अनुसार, विशिष्ट क्षेत्र में- महिलाओं की स्थिति एवं संस्कृति के विषय में ज्ञानवर्द्धन कराना है। शिक्षार्थी इन दोनों में से कोई एक माडयूल अध्ययन या परीक्षा के लिए चयन कर सकते हैं।

(अ) महिलाओं की स्थिति

प्रस्तावना : इतिहास से लेकर वर्तमान समय तक स्त्रियों की दशा से परिचित कराना इस माडयूल का उद्देश्य है। यह लिंग-विभेद, स्त्रियों की समस्याएँ एवं उनके द्वारा समानता एवं सशक्तिकरण के प्रयासों की भी व्याख्या करता है।

5.1 समाज एवं पर्यावरण।

5.2 ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक-परिप्रेक्ष्य।

5.3 लिंग विभेद।

5.4 स्त्रियों की समस्याएँ।

5.5 समानता एवं महिला सशक्तिकरण की तलाश

अथवा

(ब) संस्कृति

प्रस्तावना : इस माड्यूल द्वारा शिक्षार्थी को संस्कृति की अवधारणा एवं उसकी विशेषताओं से परिचित कराने का प्रयास किया गया है। यह संस्कृति के विभिन्न पहलुओं के संबंध में ज्ञान वर्द्धन कराता है, विशेष रूप से भारतीय सांस्कृति की विरासत के संबंध में।

5.1 संस्कृति, अवधारणा तथा विशेषताएँ।

5.2 भारतीय सांस्कृतिक विरासत।

5.3 सांस्कृतिक बाहुल्यता।

5.4 मीडिया एवं संस्कृति।